11

भाषा और विचार का सम्बन्ध

यह लेख पिछले लेख में कही गई बातों को आगे बढ़ाता है और भाषा व विचार के रिश्ते को समझने के लिए कुछ नए उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। भाषा और विचार का रिश्ता कैसा है यह पूरी तरह बयान करना बड़ा कठिन है। कहाँ भाषा खत्म हुई कहाँ विचार शुरू हुए? क्या विचार बिना भाषा के भी शुरू हो सकते हैं? क्या हम बिना भाषा के किसी चीज़ का विवरण दे सकते हैं? क्या भाषा हमारी सोच को प्रभावित करती है? कैसे पता चलता है कि यह हमारी सोच को प्रभावित करती है? ये सभी बड़े ही जटिल प्रश्न हैं और शायद इसीलिए इनके जवाब भी जटिल हैं। लेकिन जवाब पाने की प्रक्रिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितने कि जवाब। यह लेख इस सन्दर्भ में विभिन्न तर्कों को प्रस्तुत करते हुए भाषा और विचार के सम्बन्ध को समझने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है।

लोग यह सवाल कई सौ वर्षों से पूछते आ रहे हैं। भाषाविद्ों ने इस पर विशेष ध्यान 1940 के बाद देना शुरू किया जब एक भाषाविद् बैंजामिन ली वोर्फ ने पूर्वोत्तर ऐरीज़ोना में रहने वाले 'होपी' समुदाय, जो कि ठेठ अमेरिकन भाषा बोलता है, का अध्ययन किया। अपने इस अध्ययन के आधार पर वोर्फ ने दावा किया कि होपी लोग और अँग्रेज़ी बोलने वाले लोग दुनिया को अलग-अलग तरीकों से देखते, समझते हैं क्योंकि उनकी भाषाएँ अलग-अलग हैं।

इससे हमें क्या बात समझ में आती है? इसका जवाब थोड़ा उलझा हुआ है। यह वैसा ही सवाल है कि अण्डा पहले आया या मुर्गी? क्या आप उन चीज़ों के बारे में नहीं सोच सकते हैं जिनके लिए आपके पास शब्द नहीं हैं? या आपके पास उनके लिए शब्द नहीं हैं क्योंकि आप उनके बारे में सोचते नहीं हैं? इस समस्या का एक हिस्सा यह भी है कि इसमें भाषा

और विचारों के अलावा कुछ और भी शामिल है और वह है संस्कृति। आपकी संस्कृति, परम्परा, जीवनशैली, आदतें और अन्य चीज़ें जो आप उन लोगों से प्राप्त करते हैं जिनके साथ आप रहते हैं। ये सभी चीज़ें आपके सोचने के तरीके को, बात करने के तरीके को प्रभावित करती हैं।

एक भाषा है गूगु यिमिथिर (Guugu Yimithirr)। इसमें बाएँ (left), दाएँ (right), पीछे (back), आगे (front) जैसे शब्द नहीं हैं। इसलिए इस भाषा को बोलने वाले हमेशा ही स्थान को बताने के लिए उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम का इस्तेमाल करते हैं। उदाहरण के लिए एक मकान का दरवाज़ा पूर्व की ओर है और वहाँ एक लड़का खड़ा है तो वे कभी नहीं कहेंगे कि एक लड़का मकान के आगे या सामने खड़ा है बल्कि वे कहेंगे कि वह मकान के पूर्व में खड़ा है। इसलिए नि:सन्देह वे सोचते होंगे कि लड़का मकान के पूर्व में खड़ा है जबकि हिन्दी भाषी सोचेगा कि वह मकान के आगे या सामने खड़ा है।

क्या भाषा सोच को प्रभावित करती है

क्या हमारी भाषा हमारे सोचने के तरीके को प्रभावित करती है? या सांस्कृतिक आदतें/परम्पराएँ हमारी सोच और भाषा दोनों को प्रभावित करती हैं? सबसे अधिक सम्भावना यह है कि संस्कृति, सोच, आदतें, भाषा सभी साथ-साथ विकसित होती हैं।

लेकिन समस्या केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं है। अँग्रेज़ी में किसी वाक्य में क्रिया का रूप यह बताता है कि यह वाक्य भूतकाल की बात कर रहा है या वर्तमान काल की। मसलन, Mary walks (मेरी चलती हैं) और Mary walked (मेरी चली थी)। लेकिन होपी भाषा में ऐसा नहीं है। होपी के वाक्य में क्रिया का रूप यह बताता है कि वक्ता के अनुसार यह हो चुका और हो रहा है या होना है और होगा। वोर्फ के अनुसार यह रूप यह बताता है कि वक्ता को यह जानकारी कैसे प्राप्त हुई। अत: होपी भाषा में स्वयं सृजित ज्ञान या जानकारी (जैसे, मैं भूखा हूँ), अभिव्यक्त करने वाले वाक्य में और सामान्यत: सभी को ज्ञात जानकारी (जैसे, आकाश नीला है), अभिव्यक्त करने वाले वाक्य में क्रिया का रूप भिन्न-भिन्न होगा। वैसे अँग्रेज़ी भाषी यह अतिरिक्त जानकारी जोड़ सकता है कि 'मैंने सुना है मेरी पास हो गई' जिसमें पता चलता है कि यह जानकारी कैसे प्राप्त हुई। लेकिन सामान्यत: यह ज़रूरी नहीं है। होपी में काल के रूप का न होना वोर्फ व अन्य के अनुसार उनकी समय की अवधारणा का अविकसित/भिन्न होना भी दर्शाता है हालाँकी इस पर विवाद है। होपी भाषा में क्रिया में उपसर्ग जोड़कर आगे आने वाली क्रिया को इंगित किया जा सकता है।

इसी भिन्नता के कारण वोर्फ का मानना है कि अँग्रेज़ी भाषी और होपी भाषी किसी घटना के बारे में भिन्न-भिन्न रूप से सोचते हैं। होपी भाषी का ज़्यादा ज़ोर जानकारी के स्रोत पर होता है जबकि अँग्रेज़ी भाषी का ज़्यादा ज़ोर घटना के समय या काल पर होता है। इसे पूरी तरह नहीं माना जाए तो भी विचार व विवरण क्षमता में अन्तर दिखता है।

एक से अधिक कैसे दिखाएँ?

इसी प्रकार अलग-अलग भाषाओं के वाक्य विन्यास में वस्तुओं को भिन्न-भिन्न प्रकार से लिया जाता है। अँग्रेज़ी में कुछ संज्ञाएँ (जैसे, bean) गिनने योग्य हैं और उनके बहुवचन बनाए जा सकते हैं (जैसे, beans)। और कुछ संज्ञाएँ ढेर या समूह के रूप में हैं और उनके बहुवचन नहीं बनाए जा सकते हैं। (जैसे आपके पास 'दो कप चावल' हो सकते हैं लेकिन 'दो चावलें' नहीं)। कुछ अन्य भाषाओं, जैसे जापानी में इस तरह का विभेद नहीं होता है। शोधकर्ताओं ने यह अध्ययन किया है कि भाषा की यह विशेषता अँग्रेज़ी भाषी को ढेर सारी और एकल वस्तुओं के बीच फर्क करने में ज़्यादा सजग बनाता है।

एक और उदाहरण देखें - वोर्फ कहते हैं कि क्योंकि अँग्रेज़ी में समय को ऐसे टुकड़ों में तोड़कर देखा जाता है जिन्हें गिना जा सके, जैसे, Three days (तीन दिन), four minutes (चार मिनट), half an hour (आधा घण्टा) इसलिए अँग्रेज़ी भाषी समय को एक अटूट धारा न मानकर समूह के रूप में देखते हैं (मिनट, सेकंड, घण्टा)। वोर्फ कहते हैं कि इसी से हम सोच पाते हैं कि समय एक वस्तु जैसा है, जिसे बचा सकते हैं, व्यर्थ गँवा सकते हैं, कमा सकते हैं जबकि होपी भाषा में समय के बारे में इस तरह से बात नहीं की जाती है। इसलिए वे समय के बारे में भिन्न तरह से सोचते हैं। उनके लिए समय एक 'सतत चक्र' के रूप में चलने वाली प्रक्रिया है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि हमारी भाषा समय के बारे में एक निश्चित दृष्टिकोण हम पर थोपती है। यह भी हो सकता है कि समय के बारे में हमारा दृष्टिकोण हमारी भाषा में प्रतिबिम्बित होता हो या हम अपनी संस्कृति में समय को जिस तरीके से लेते हैं वह हमारी भाषा और सोच दोनों में प्रतिबिम्बित होता हो।

यह ऐसा लगता है जैसे भाषा, विचार और संस्कृति एक चोटी की तीन लटें हैं जो एक-दूसरे में गुँथी हुई हैं, एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

क्या हम भाषा में ही सोचते हैं

लोग भाषा में सोचते हैं, सही है ना? हमेशा तो नहीं लेकिन अधिकांशत: यह बात सही है। आप आसानी से एक ऐसी मानसिक छवि गढ़ सकते हैं और उसकी अनुभूति कर सकते हैं, जिसे शब्दों में वर्णित करना मुश्किल हो। आप ध्वनि के सुरीलेपन, नाशपाती के आकार और किसी मसाले की गन्ध के बारे में सोच सकते हैं और इनमें से किसी भी विचार के लिए भाषा आवश्यक नहीं है।

तो यह सम्भव है कि मैं किसी के बारे में सोच सकता हूँ, तब भी जब उसके लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं? हाँ, उदाहरण के लिए रंगों को लीजिए। यहाँ असंख्य भिन्न-भिन्न रंग हैं। लेकिन सभी के लिए अलग-अलग नाम नहीं हैं। यदि आपके पास एक लाल रंग से भरा डिब्बा है और आप उसमें धीरे-धीरे एक-एक बूँद नीला रंग मिलाते हैं तो यह बहुत धीरे-धीरे लाल बैंगनी, फिर बैंगनी, फिर नीले बैंगनी में परिवर्तित होगा। प्रत्येक बूँद रंग को बहुत थोड़ा-थोड़ा परिवर्तित करेगी लेकिन कोई एक ऐसा क्षण नहीं आएगा जब यह एकदम से लाल न रहकर बैंगनी बन

जाएगा। रंगों का वर्णक्रम एक निरन्तरता लिए होता है। हमारी भाषा इस तरह से निरन्तर नहीं है। हमारी भाषा हमें इस तरह बनाती है कि हमें रंगों के वर्णक्रम को लाल, बैंगनी, नीला इसी तरह से अन्य रंगों में वर्गीकृत करना पड़ता है।

न्यू गुआना के दानी आदिवासी लोगों की भाषा में रंगों के लिए केवल दो परिभाषाएँ हैं- एक गाढ़ा रंग (नीला, हरा), दूसरा हल्का रंग (पीला, लाल)। उनकी भाषा रंगों के वर्णक्रम को अलग तरह से वर्गीकृत करती हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे लाल और पीले रंग में फर्क नहीं कर पाते हैं।

रूसी भाषा में, हल्के नीले और गहरे नीले रंग के लिए दो अलग-अलग शब्द हैं। क्या इसका मतलब यह है कि रूसी भाषी इन्हें दो अलग रंगों के रूप में मानते व सोचते हैं, जबकि अँग्रेज़ी भाषी उन्हें एक ही रंग मानते व सोचते हैं क्योंकि उनके पास इनके लिए एक ही शब्द (blue) है?

क्या शब्द सोच को सीमित करते हैं

क्या आप सोचते हैं कि लाल और गुलाबी अलग-अलग रंग हैं? यदि हाँ तो आप अपनी भाषा से प्रभावित हो सकते हैं, क्योंकि आखिरकार गुलाबी रंग लाल रंग भी तो हो ही सकता है। ठीक उसी तरह जैसे पीले, हरे, नीले रंगों के ऐसे कई प्रकार (शेड्स) होते हैं जिन्हें एक तरह का हल्का हरा ही माना जा सकता है और माना जाता है। वहीं कई बार शब्द न होने पर और फर्क को इंगित करने की ज़रूरत पूरा करने के लिए आप नए शब्द बना लेते हैं, जैसे आसमानी, गहरा नीला या अँग्रेज़ी में Sky blue, Navy blue अथवा Royal blue। इसी तरह पीले व हरे के बारे में भी है। मसलन हल्दिया, नींबू रंग, चटख पीला। यानी रंगों में फर्क कर पाने की वजह से ही शब्दों की ज़रूरत हुई जो उस फर्क को दूसरों के साथ बाँटने की क्षमता हमें दे सकें। क्या आप ऐसे और उदाहरण रंगों के बारे में व अन्य विचारों के सन्दर्भ में सोच सकते हैं?

हमारी भाषा हमें बाध्य नहीं करती है कि हम वही देखें जिनके लिए हमारे पास शब्द हैं लेकिन हम चीज़ों का समूह में किस तरह वर्गीकरण करते हैं, उन्हें कहाँ रखते हैं, इसे भाषा प्रभावित कर सकती है। बच्चा जब भाषा सीख रहा होता है तो उसे यह पता लगाना होता है कि कौन-सी चीज़ें उस शब्द विशेष के अन्तर्गत आएँगी। एक बच्चा जिसके घर में जर्मन शेफर्ड (German Shepherd) - भेड़िये जैसी दिखने वाली नस्ल का कुत्ता है उसे वह 'कुत्ता' कहता है। एक दिन वह बच्चा भेड़िया देखे तो हो सकता है कि उसे भी वह कुत्ता ही कहे लेकिन वही बच्चा पड़ोसी के पामेरियन नस्ल के कुत्ते, सफेद बालों वाला को कुत्ता न कहे क्योंकि भेड़िए जैसे जानवर को उसने कुत्ता के समूह में रखा है। बच्चे को यह सीखना पड़ेगा कि 'कुत्ता' शब्द के अन्तर्गत किस तरह के प्राणी आएँगे।

हम यह सीखते हैं कि जो चीज़ें एक जैसी हैं और एक समूह की हैं उन्हें कोई एक नाम दे देते हैं। लेकिन कितनी एक जैसी चीज़ें, एक ही नाम/समूह के अन्तर्गत आएँगी, यह अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग हो सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो हम क्या सोचते हैं इस

पर भाषा का प्रभाव इतना नहीं होता, जितना इस पर होता है कि वास्तविकता को हम कैसे समूहों में बाँटते हैं और उन समूहों को कोई नाम देते हैं। और इसमें भी हमारी भाषा और हमारी सोच दोनों हमारी संस्कृति से प्रभावित होते हैं।

इन्यूइत और बर्फ के लिए शब्द

लेकिन बर्फ के लिए इन्यूइत के उन विभिन्न शब्दों का क्या? आपने यह सुना होगा कि इन्यूइत (उत्तरी ध्रुव और उसके आसपास रहने वाले) लोगों के पास बर्फ के लिए सैकड़ों शब्द हैं। लोग अक्सर इसका प्रयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि दुनिया को देखने का हमारा नज़रिया हमारे परिवेश, संस्कृति से जुड़ा है और यही यह तय करता है कि हम विभिन्न चीज़ों के बारे में बात कैसे करते हैं। लेकिन यह सच नहीं है कि इन्यूइत के पास बर्फ के लिए अनेक शब्द हैं, और यह भी नहीं कि इन्यूइत लोगों की एक ही भाषा है। जिन्हें हम इन्यूइत लोग कहते हैं, वे अनेक अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं। और यदि हम उनकी कोई एक भाषा या बोली लें, तो हमें उसमें बर्फ के लिए अँग्रेज़ी से बहुत ज़्यादा शब्द नहीं मिलते हैं। यहाँ सवाल यह भी है कि हम एक शब्द किसे मान रहे हैं? अँग्रेज़ी में हम यौगिक रूप (Compound Form) प्राप्त करने के लिए शब्दों को आपस में जोड़ सकते हैं जैसे Snowball (बर्फ का गोला), Snowflake (बर्फ कण), Skyblue, Semicircle आदि। इन्यूइत भाषाओं में इस तरह से शब्द गठन की प्रक्रिया अँग्रेज़ी से ज्यादा है। इसलिए एक मूल शब्द (जैसे, Snow) सैकड़ों अन्य सम्बन्धित शब्दों का आधार हो सकता है। इसलिए यह शायद उचित नहीं है कि प्रत्येक शब्द को अलग शब्द माना जाए। यदि आप केवल मूल शब्द गिनें तब आप पाएँगे कि इन्यूइत भाषाएँ अँग्रेज़ी से इतनी भिन्न नहीं हैं। आखिरकार अँग्रेज़ी में अलग-अलग तरह के Snowfall (हिमपात) के लिए अनेक शब्द हैं- Sleet (बर्फीली बारिश), Slush (गलती हुई बर्फ), Frost (पाला), Blizzard (बर्फानी तूफान), Avalanche (हिमस्खलन), Drift Powder (बर्फ का चूर्ण), Flurry (बर्फ का झोंका) आदि। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि नई भाषा सीखने से आपके सोचने के ढ़ंग में कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन अचानक नहीं होगा, लेकिन यदि नई भाषा आपकी भाषा से बहुत ज्यादा भिन्न है तो यह आपको अन्य संस्कृति और अन्य जीवन शैली की अन्त:दृष्टि दे सकता है।

सन्दर्भ

- भाषा व भाषा शिक्षण - द्वितीय वर्ष, डीएड सामग्री, 2013, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान परिषद, छत्तीसगढ़।